

मखरी। ई, पुक्तः। यद्वायात्तोयमित्येके।
अभिवः। ज्ञानं मन्थनं पीडनं सन्धानम्।
इति दुर्गादासः।

पुत्रः, पुं, कुम्भरिः। इति शारावली। ८३।
(वङ्गरजातिविशेषः। यथा, मनुः। १०। ४८।

“मेदात्पुत्रमुक्त्वामारण्यपशुचिंसनम्।”

“पुत्रमर्द्धगुच वैदेहकवन्दिस्त्रियोत्रास्येन जातौ
वैधायनेनोत्तौ बोद्धवौ।” इति तद्गीकायां
कुङ्कुमभङ्गः। आकरयोक्तप्रत्ययविशेषः। स
तु प्रविहार्यं भवति। यथा, विद्यया विन्नो
विद्यापुत्रुः। इति सिद्धान्तकौमुदी। स्त्री,
उङ्गिन्विशेषः। चेतुना इति लोके। गार्होच-
वत्। अन्ता पर्याया गुणाश्च यथा,—

“पिशा चपुचुकी च दौर्धमत्रा सतिक्का।
पुत्रुः श्रौता वरा तथा खादो दोषत्रयापहा।
घातुपुत्रिकरो न्या मेधपिक्कलका खृता।”
इति भावप्रकाशस्य पूर्वखण्डे प्रथमे भागे।

“गुपचंगायानुचोर्वा षोडशिकाया रश्चैरपि।”
इति वामटे षिकित्वास्थाने नवमेऽध्याये।

पुत्रुरी, स्त्री, (पुत्रुरिव रातीति। रा+कः।
स्त्रियां ङीप्।) तिन्निङीद्वृतम्। इति त्रिकाण्ड-
शेषः। काँरवीचिर खेला इति भाषा।

पुत्रुणी, स्त्री, (पुत्रुरी। रख लत्वम्।) तिन्नि-
ङीकास्त्रिभूतक्रीडा। इति शारावली। ६२।

पुट, तुच्छने। इति कविकल्पद्रुमः। (भ्रां-परं-
अकं-सेट्।) पञ्चमखरी। तुच्छनमल्पोभावः।
चोटति नदी यौञ्जे। इति दुर्गादासः।

पुट, इ तुच्छने। इति कविकल्पद्रुमः। (भ्रां-परं-
अकं-सेट्।) पञ्चमखरी। तुच्छनमल्पोभावः।
इ, पुट्यते नदा यौञ्जे। इति दुर्गादासः।

पुट, इ क हेदे। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
परं-सकं-सेट्।) पञ्चमखरी। इ क, पुट-
यति घाणं षोकः। इति दुर्गादासः।

पुट, क शि हेदे। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
पुरां-परं-सकं-सेट्।) क, चोटयति। शि,
पुटयति अचुटीत्। इति दुर्गादासः।

पुट, क तुच्छने। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
परं-अकं-सेट्।) टड्यान्तः। पञ्चमखरी।
एकटकार इति रामः। तुच्छनमल्पोभावः।
क, पुटयति नदी यौञ्जे। इति दुर्गादासः।

पुट, इ तौच्छे। इति कविकल्पद्रुमः। (भ्रां-
परं-अकं-सेट्।) इ, पुट्यते। तौच्छमल्पो-
भावः। इति दुर्गादासः।

पुट, इ क हिदि। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
परं-सकं-सेट्।) इ क, पुटयति। इति दुर्गा-
दासः।

पुट, इ क रोषे। (पुरां-परं-अकं-सेट्।) इ क,
पुटयति। इति दुर्गादासः।

पुट, इ उ रोषे। (भ्रां-प्राप्तं-अकं-सेट्।) इ,
पुट्यते। उ; पुकते। इति दुर्गादासः।

पुटु, इती। हावे। इति कविकल्पद्रुमः। (भ्रां-
परं-सकं-अकं-सेट्।) टपकंलतीयोपधः।

क्विति संयोगान्तलोपे पुट्। कातन्वादी हाव-
करण इत्येकोऽर्थो दृश्यते। अमी हावाः क्रियाः
शङ्कारभावजाः। इत्यमरः। भाव एवाल्प-
संलक्ष्यविकारो हाव इत्यते। इति साहित्य-
दर्पणम्। पुत्रुति कान्तापवा कान्तः। इति
दुर्गादासः।

पुण, शि हिदि। इति कविकल्पद्रुमः। (तुदां-
परं-सकं-सेट्।) शि, पुणति अचुयीत् पुचोय।
इति दुर्गादासः।

पुण्टा, स्त्री, (पुण्टातेऽसाविति। पुण्टहेदे + घञ्।
वृत्तिकाखननेन जायमानत्यातयात्वम्।) कूपः।
इति त्रिकाण्डशेषः।

पुण्टी, स्त्री, कूपः। इति त्रिकाण्डशेषः। उपकूपम्।
कूप समीपे खल्वणलाधारः। इति हेमचन्द्रः।

पुत, इर् चरे। इति कविकल्पद्रुमः। (भ्रां-परं-
सकं-सेट्। अकं-इति केचित्।) इर्, अचुतत्
अचोतीत्। चर इह आसिचनम्। चोतति वृत्तं
वह्नी यज्वा आसिचतीत्यर्थः। इति दुर्गादासः।

पुतः, पुं, (चोतति चरति मलश्रोत्रितादिर्यस्मात्।
पुत + घणर्थे कः।) गुदहारम्। इति शब्द-
रत्नावली।

पुतिः, स्त्री, (चोतति चरति मलश्रोत्रितादि-
र्वस्वाः। पुत + “सर्वधातुभ्य इन्।” उर्वा
४।११७। इति इन्।) गुदहारम्। इति शब्द-
रत्नावली।

पुद्, क तुदि। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-परं-
सकं-सेट्।) इदि प्रेरये। क, चोदयति बाणं
चापः। इति दुर्गादासः।

पुद्ड, इती। हावे। इति कविकल्पद्रुमः। (भ्रां-
परं-सकं-अकं-च-सेट्।) तवर्गलतीयोपधः।
क्विति संयोगान्तलोपे पुट्। कातन्वादी हाव-
करण इत्येकोऽर्थो दृश्यते। अमी हावाः क्रियाः
शङ्कारभावजाः। इत्यमरः। भाव एवाल्प-
संलक्ष्यविकारो हाव इत्यते। इति साहित्य-
दर्पणम्। पुत्रुति कान्तापवा कान्तः। इति
दुर्गादासः।

पुन्द्री, स्त्री, (चोदयति प्रेरयति घटयतीत्यर्थः।
नायकादीमिति। पुद् + कः। निपातनात्तुमा-
गमः। ततः स्त्रियां ङीप्।) कुट्टनी। इति
हेमचन्द्रः। ३। १६७।

पुप, इनेर्गती। इति कविकल्पद्रुमः। (भ्रां-परं-
सकं-सेट्।) चोपति खल्लः। चोपति दुष्टं राजा।
इति रमानाथः। इति दुर्गादासः।

पुव, इ कि पुम्ने। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
पक्षे भ्रां-परं-सकं-सेट्।) पुम्नेर्गती। पुम्नेर्गती।
इति रमानाथः। इति दुर्गादासः।

पुव, इ कि पुम्ने। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
पक्षे भ्रां-परं-सकं-सेट्।) पुम्नेर्गती। पुम्नेर्गती।
इति रमानाथः। इति दुर्गादासः।

पुव, इ कि पुम्ने। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
पक्षे भ्रां-परं-सकं-सेट्।) पुम्नेर्गती। पुम्नेर्गती।
इति रमानाथः। इति दुर्गादासः।

पुव, इ कि पुम्ने। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
पक्षे भ्रां-परं-सकं-सेट्।) पुम्नेर्गती। पुम्नेर्गती।
इति रमानाथः। इति दुर्गादासः।

पुव, इ कि पुम्ने। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
पक्षे भ्रां-परं-सकं-सेट्।) पुम्नेर्गती। पुम्नेर्गती।
इति रमानाथः। इति दुर्गादासः।

पुव, इ कि पुम्ने। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-
पक्षे भ्रां-परं-सकं-सेट्।) पुम्नेर्गती। पुम्नेर्गती।
इति रमानाथः। इति दुर्गादासः।

पुत्रुम्यः, पुं, (पुत्रुम्यति आकवति गौहमिति।
पुत्रु + षुल्।) कान्तलोहभेदः। तत्पुत्रुम्यः।
कान्तपाषाणः २ अयस्कान्तः ३ लोहकवर्कः ४।
अस्य गुणाः। खेनलम्। श्रौतलम्। मेदी-
विषगरापहलम्। इति भावप्रकाशः। (विशेषो-
ऽस्य कान्तलोहशब्दे श्रेयः।) घटस्थोर्हाव-
लम्बनम्। इति मेदिनी। के, ८६।

पुत्रुम्यः, त्रि, (पुत्रुम्यतीति। पुत्रु + षुल्। पुत्रुम-
परः। धूर्तः। बहुवच्यैकदेशश्चः। इति मेदिनी।
के, ८६।

पुत्रुम्यः, स्त्री, (पुत्रु इ कि पुत्रुने + भावे ल्युट्।)
सुखसंयोगः। पुत्रुम्य इति भाषा। तस्य
स्थानान् यथा, कामशास्त्रे।

“सुखे स्तने ललाटे च कण्ठे च नेत्रयोरपि।
गण्डे च कर्णयोश्चैव कचोरभगम्बुसु।
पुत्रुम्यस्थानमित्युक्तं विज्ञेयं कासुकेरिह।”

पुर, कि ज्ञेये। इति कविकल्पद्रुमः। (पुरां-पक्षे-
भ्रां-परं-सकं-सेट्।) कि, चोरयति चोरति
धनं चौरः। इति दुर्गादासः।

पुरा, स्त्री, (पुर + बाहुलकात् कः। स्त्रियां टाप्।)
चौथम्। इति शब्दरत्नावली।

पुरी, स्त्री, (पुर + कः। स्त्रियां ङीप्।) उप-
कूपम्। कूपसमीपस्थाखणलाधारः। इति
हेमचन्द्रः। ४। १५६।

पुत्रुकं, स्त्री, (चोलयतीति। पुत्रु + बाहुलकात्
उकञ्।) माषमञ्जनजलम्। यथा, माष-
मञ्जनजलमाचामं तपुत्रुकमिति महोपनिषत्।

पुत्रुकः, पुं, (चोलयति उन्नतो भवतीति। पुत्रु
उन्नतौ + बाहुलकात् उकञ्।) घनपङ्कः। इति
त्रिकाण्डशेषः। प्रवृत्तिः। भाङ्कप्रभेदः। इति
हेमचन्द्रः।

पुत्रुकौ, [न्] पुं, (पुत्रुक ऊर्ध्वोन्नतिर्विद्यतेऽस्य।
पुत्रुक + इनिः।) शिशुमारारुतिमत्स्यः। इति
शब्दरत्नावली। (यथा, वामटे रुद्रस्थाने। ६। ५८।

“पुत्रुकी नरुमकरशिशुमारारुतिमिङ्गलाः।
राजीचलिनिमादाश्च मांसमित्याहुररथा।”)

पुत्रुम्य, जोषे। इति कविकल्पद्रुमः। (भ्रां-परं-
सकं-सेट्।) अन्तःस्थलतीवमध्यः। पञ्चमखर-
हयी। ओष्ठवर्गशेषोपधः। पुत्रुम्यति। यगदौ
पुत्रुम्यते इत्यादि। न तु नकारजावतुस्वार-

पञ्चमाविति खरवाप्तप्रकृतित्वे यगदौ तल्लोप
दाव वाच्यम्। तर्हि नोपधस्यैव पठितुमुचित-
त्वात्। एवं सति अङ्गादीनां न प्रकृतित्वेऽपि
उमध्यपाठः कथमिति चेन्न। ते तु कस्यचित्कते
उमध्या एवेति प्रांपनाय उमध्याः पठिताः। न
च तर्हि इदित् पाठोऽपीदृश्विदिरिति वाच्यम्।
क्विति संयोगान्तलोपे इदित्पाठे पुत्रुम् पुत्रुम्य
लोपे पुत्रुम् इति भेदात्। एवं सर्वत्र। इति
दुर्गादासः।

पुत्रुम्यः, पुं, (पुत्रुम्यते इति पुत्रुम्यनमिति वा।
पुत्रुम्य + भावे घञ्।) बाजलावनम्। इति
जटाधरः।

पुत्रुम्यः, पुं, (पुत्रुम्यते इति पुत्रुम्यनमिति वा।
पुत्रुम्य + भावे घञ्।) बाजलावनम्। इति
जटाधरः।

पुत्रुम्यः, पुं, (पुत्रुम्यते इति पुत्रुम्यनमिति वा।
पुत्रुम्य + भावे घञ्।) बाजलावनम्। इति
जटाधरः।

पुत्रुम्यः, पुं, (पुत्रुम्यते इति पुत्रुम्यनमिति वा।
पुत्रुम्य + भावे घञ्।) बाजलावनम्। इति
जटाधरः।

पुत्रुम्यः, पुं, (पुत्रुम्यते इति पुत्रुम्यनमिति वा।
पुत्रुम्य + भावे घञ्।) बाजलावनम्। इति
जटाधरः।